संज्ञा प्रकरण

Demo–3#

संयोग संज्ञाविधायक संज्ञा सूत्रम्

⇒ हलोऽनन्तराः संयोगः

अचों से अव्यवहित हल् संयोग संज्ञक होते हैं।

उदा॰- कृष्णः = क् + ऋ + ष् + ण् + अ + ः

पुष्प = प् + उ + ष् + प् + अ

वृद्धि संज्ञा

⇒ वृद्धिरादैच्

वृद्धिः आत् ऐच्

↓

(आ), (ऐ), (औ)

वृद्धि संज्ञा विधायक सूत्र

वृद्धि संधि विधायक सूत्र

उदा॰- कृष्ण + ऐकत्वम = कृष्णैकत्वम

गुण संज्ञा

⇒ अदेङ् गुणः

↓

अत् एङ् गुणः

अ ए ओ (गुण)

गुण संज्ञा विधायक सूत्र

गुण संधि विधायक सूत्र

प्रगृह्य संज्ञा

⇒ इदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्

ईत् ऊत् एत् द्विवचनं प्रगृह्यम्

↳ ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त शब्द जो द्विवचनान्त होते हैं, उनकी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

उदा॰- हरी, कवी, साधू, विष्णू, गंगे, लेत

(हरि) (कवि) (साधु) (विष्णु)

घ संज्ञा

⇒ तरप्तमपौ घः

↓

तरप् और तमप् प्रत्यय की घ संज्ञा होती है।

↓

तुलनात्मक

निष्ठा संज्ञा

⇒ क्तक्तवतू निष्ठा

↳ क्त और क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है।

भूतकाल ↳ वान्, वती, वत्

गम् + क्त

⇓

गतः, गता, गतम्

सत् संज्ञा

⇒ तौ सत्

सूत्रार्थ-: शतृ एवं शानच् इनकी सत् संज्ञा होती है।

वर्तमान काल

विभाषा संज्ञा

⇒ न वेति विभाषा

↳ न वा इति विभाषा

निषेध विकल्प

सम्प्रसारण संज्ञा

⇒ इग्यणः सम्प्रसारणम् ⟵ यण् के स्थान पर इक् (इ, उ, ऋ, ऌ) (य्, व्, र्, ल्)

टि संज्ञा

⇒ अचोऽन्त्यादि टि

↳ अंतिम अच् से परे (बाद में) वर्ण समुदाय की टि संज्ञा होती है।

उदा०- मनस् = म् + अ + न् + अ + स् ⇒ अस्

राजन् = र् + आ + ज् + अ + न् ⇒ अन्

दधि = इ

उपधा संज्ञा

⇒ अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा

↳ अंतिम वर्ण से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

उदा०- मनस् = म् + अ + न् + (अ) + स् = अ
(उपधा)

आत्मन् = अ (उपधा)

दधि = द् + अ + ध् + इ = ध्

व्याकरण के सूत्रों की ६ श्रेणियाँ हैं अर्थात् ६ प्रकार के सूत्र होते हैं—

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्॥

१. संज्ञासूत्र २. परिभाषासूत्र ३. विधिसूत्र ४. नियमसूत्र, ५- अतिदेशसूत्र और ६ अधिकारसूत्र

१. संज्ञासूत्र— जो सूत्र संज्ञाओं का विधान करते हैं, ऐसे सूत्र संज्ञा-सूत्र या संज्ञाविधायक सूत्र कहलाते हैं। जैसे— हलन्त्यम, अदर्शनं लोपः, तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् आदि।

२. परिभाषासूत्र— जो अनियम होने पर नियम करते हैं, ऐसे सूत्र परिभाषा-सूत्र कहलाते हैं। जैसे— स्थानेऽन्तरतमः, यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम्, अनेकाल्शित् सर्वस्य आदि।

३ विधिसूत्र— जो सूत्र यण्, गुण, वृद्धि दीर्घ, प्रत्यय, आदेश आदि का विधान करते हैं, ऐसे सूत्र विधिसूत्र कहलाते हैं। जैसे— इको यणचि, एचोऽयवायावः, आद्गुणः वृद्धिरेचि, अकः सवर्णे दीर्घः आदि।

४. नियमसूत्र— किसी सूत्र के द्वारा कार्य सिद्ध होते हुए उसी कार्य के लिए यदि किसी अन्य सूत्र को पढ़ा गया हो, तो वह सूत्र नियमसूत्र कहलाता है।

५. अतिदेशसूत्र— जो वैसा नहीं है, उसे वैसा मानना अतिदेश है। जैसे कि शिष्य जो गुरू नहीं है, अब उसे गुरू के तुल्य माना जाये।

६. अधिकारसूत्र— कुछ सूत्र ऐसे होते हैं, जो अपने क्षेत्र में कोई कार्य नहीं करते किंतु अन्य सूत्रों के क्षेत्र में अपना अधिकार रखते हैं, उसके सहायक बनते हैं। ऐसे सूत्र अधिकारसूत्र हैं।